विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

रूपम कुमारी

वर्ग -दशम

विषय- हिंदी

दिनांक -10-11-20

NCERT syllabus

|| अध्ययन -सामग्री ||

कृतिका पाठ- 3

||साना साना हाथ जोड़ि ...

--मधु कांकरिया

पाठ समीक्षा

यह पाठ एक यात्रा वृतांत है जिसे लेखिका ने अपने गंगटोक यात्रा के दौरान समेटे हुए अनुभव और रोमांच को अपने सुंदर , सुगठित और तत्सम प्रधान भाषा में समेटने का प्रयास किया है । इस पाठ के कई रंग हैं , जैसे- पाठ में प्रकृति का अलौकिक सौंदर्य तो देखने को मिलेगा ही साथ ही साथ आध्यात्मिकता की भी अनोखी यात्रा पर आप चलेंगे । आपको महसूस होगा कि जब कोई व्यक्ति प्रकृति के साथ एकाकार होने की कोशिश करता है तो उसकी मानसिक स्थिति किस प्रकार की जाती है ।

पाठ की विशेषता- यह एक यात्रा वृतांत है जिसका तात्पर्य होता है किसी भी लेखक के

द्वारा किसी महत्वपूर्ण यात्रा के अनुभवों को कलमबद्ध करना तथा इस लेखन का उद्देश होता है पाठकों का मनोरंजन करना और उस स्थान या यात्रा विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी को पाठकों तक पहुंचाना । यह कठिन सारे उद्देश्यों को पूर्ण करता है ।

पूर्वावलोकन

कल की कक्षा में आपने मधु कांकरिया के जीवन परिचय को पढा तथा पाठ अंतर्गत आपने जाना कि मधु कांकरिया गंगटोक की यात्रा का आरंभ करती है और जिसका पहला गंतव्य का यूमथांग होता है जिसके पूर्व ही वह घंटों के अभूतपूर्व सौंदर्य से चकित रह जाती हैं और उनका आंतरिक परिवर्तन शुरू

हो जाता है और हृदय में एक प्रार्थना उठने लगती है - साना साना हाथ जोड़ि ....

यह नेपाली भाषा की प्रार्थना है जिसका अर्थ है छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही थी मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो । हृदय में प्रार्थना का स्वत: उठना एक असाधारण प्रक्रिया है । यह स्थिति मनुष्य सारी वृत्तियों से हटकर अपनी आत्मा या प्रकृति से जुड़ जाता है । यात्रा के शुरुआती तारा ऊपर ही लेखिका की मानसिक स्थिति उच्चस्तरीय हो चुकी थी ।

अब आगे .....

पेज -18 एवं 19 यहां संलग्न कर रहे हैं आप इसे पढ़ ली और इसका असर लेकर हम पर उपस्थित हों गे ।

तरह इस बार भी बादलों के कपाट ठाकुर जी के कपाट की तरह बंद ही रहे। कंचनजंघा न दिखनी थी, न दिखी। पर सामने ही रकम-रकम[3] के रंग-बिरंगे इतने सारे फूल दिखाई पड़े कि लगा फूलों के बाग में आ गई हूँ।

बहरहाल...गैंगटॉक से 149 किलोमीटर की दूरी पर यूमथांग था। "यूमथांग यानी घाटियाँ...सारे रास्ते हिमालय की गहनतम घाटियाँ और फूलों से लदी वादियाँ मिलेंगी आपको" ड्राइवर-कम-गाइड जितेन नार्गे मुझे बता रहा था। "क्या वहाँ बर्फ़ मिलेगी?" मैं बचकाने उत्साह से पूछने लगती हूँ।

चलिए तो...।

जगह-जगह गदराए पाईन और धूपी के खूबसूरत नुकीले पेड़ों का जायजा लेते हुए हम पहाड़ी रास्तों पर आगे बढ़ने लगे कि एक जगह दिखाई दीं...एक कतार में लगी सफ़ेद-सफ़ेद बौद्ध पताकाएँ। किसी ध्वज की तरह लहराती...शांति और अहिंसा की प्रतीक ये पताकाएँ जिन पर मंत्र लिखे हुए थे। नार्गे ने बताया-यहाँ बुद्ध की बड़ी मान्यता है। जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। नहीं, इन्हें उतारा नहीं जाता है, ये धीरे-धीरे अपने आप ही नष्ट हो जाती हैं। कई बार किसी नए कार्य की शुरुआत में भी ये पताकाएँ लगा दी जाती हैं पर वे रंगीन होती हैं। नार्गे बोलता जा रहा था और मेरी नज़र उसकी जीप में लगी दलाई लामा की तसवीर पर टिकी हुई थी। कई दुकानों पर भी मैंने दलाई लामा की ऐसी ही तसवीर देखी थी।

हिचकोले खाती हमारी जीप थोड़ी और आगे बढ़ी। अपनी लुभावनी हँसी बिखेरते हुए जितेन बताने लगा...इस जगह का नाम है कवी-लोंग स्टॉक। यहाँ 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी। तिब्बत के चीस-खे बम्सन ने लेपचाओं के शोमेन से कुंजतेक के साथ संधि-पत्र पर यहीं हस्ताक्षर किए थे। एक पत्थर यहाँ स्मारक के रूप में भी है। (लेपचा और भुटिया सिक्किम की इन दोनों स्थानीय जातियों के बीच चले सुदीर्घ झगड़ों के बाद शांति वार्ता का शुरुआती स्थल।)

उन्हीं रास्तों पर मैंने देखा-एक कुटिया के भीतर घूमता चक्र। यह क्या? नार्गे कहने लगा..."मैडम यह धर्म चक्र है। प्रेयर व्हील। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।"

"क्या?" चाहे मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी। लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक जैसी।

3. तरह-तरह के

रफ़्ता-रफ़्ता[4] हम ऊँचाई की ओर बढ़ने लगे। बाज़ार, लोग और बस्तियाँ पीछे छूटने लगे। अब परिदृश्य से चलते-चलते स्वेटर बुनती नेपाली युवतियाँ और पीठ पर भारी-भरकम कार्टून ढोते बौने से दिखते बहादुर नेपाली ओझल हो रहे थे। अब नीचे देखने पर घाटियों में ताश के घरों की तरह पेड़-पौधों के बीच छोटे-छोटे घर दिखाई दे रहे थे। हिमालय भी अब छोटी-छोटी पहाड़ियों के रूप में नहीं वरन् अपने विराट रूप एवं वैभव के साथ सामने आने वाला था। न जाने कितने दर्शकों, यात्रियों और तीर्थाटानियों का काम्य हिमालय। पल-पल परिवर्तित हिमालय!

और देखते-देखते रास्ते वीरान, सँकरे और जलेबी की तरह घुमावदार होने लगे थे। हिमालय बड़ा होते-होते विशालकाय होने लगा। घटाएँ गहराती-गहराती पाताल नापने लगीं। वादियाँ चौड़ी होने लगीं। बीच-बीच में करिश्मे की तरह रंग-बिरंगे फूल शिद्दत[5] से मुसकराने लगे। उन भीमकाय पर्वतों के बीच और घाटियों के ऊपर बने संकरे कच्चे-पक्के रास्तों से गुज़रते यूँ लग रहा था जैसे हम किसी सघन हरियाली वाली गुफा के बीच हिचकोले खाते निकल रहे हों।